IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

कमल कान्त
शोधार्थी
शिक्षा संकाय
आर.आर.पी.जी. कॉलेज
अमेठी
सम्बद्ध राम मनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

डा0 सुभाष सिंह
प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
आर.आर.पी.जी. कॉलेज
अमेठी
सम्बद्ध राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय, अयोध्या

सारांश

आधुनिक प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को भावी जीवन की परिस्थितियों का सामना करने में समर्थ बनाने के लिए शारीरिक तथा मानसिक प्रशिक्षण देकर उसका प्रकार से विकास करना है कि वास्तव में वह उपयोगी नागरिक बन सके। प्राथमिक शिक्षा की सफलता योग्य, प्रशिक्षित, अनुभवी तथा शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक, शिक्षिकाओं पर निर्भर है। सरकार ने प्राथमिक शिक्षा में बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त किया है। वर्तमान में दोनों के शिक्षण कार्य, कर्तव्य, जिम्मेदारियां समान है, किन्तु शैक्षिक योग्यता, बौद्धिक क्षमता तथा प्रशिक्षण की प्रकृति आदि में पर्याप्त अन्तर है, फलस्वरूप इन सबका प्रभाव उनके कार्य संतुष्टि पर पड़ना स्वाभाविक है। इससे उनके शैक्षिक जीवन में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएं खड़ी हो सकती है, और उनका दुष्परिणाम शिक्षा शिक्षण पर पड़ सकता है। इस क्षेत्र में शोधार्थी द्वारा चयनित शोध समस्या ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'' को लिया गया है। शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा कानपुर नगर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षकाओं को यादृच्छिक रूप से न्यादर्श विधि से चयन करते हुए न्यादर्श के रूप में 200 बी.टी.सी. एवं 200 बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया है। शोध अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि मापने हेतु डॉ0 अमर सिंह (पटियाला) एवं टी.आर. शर्मा (पटियाला) द्वारा प्रमाणित उपकरण का प्रयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (CR) का प्रयोग करते हुए सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0. 01 के मान से तुलना की गयी है। जिसका विस्तृत विवरण किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना।
3. शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक नहीं है।
2. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र कानपुर नगर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं तक सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर नगर जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् 400 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। इनका चयन यादृच्छिक न्यादर्शन के आधार पर किया गया है।

विवरण

प्राथमिक विद्यालय	**शिक्षक**	**शिक्षिकाएं**	**योग**
ग्रामीण	100	100	200
शहरी	100	100	200
कुल योग	**200**	**200**	**400**

उपकरण का चयन

बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि मापने हेतु डॉ0 अमर सिंह (पटियाला) एवं टी.आर. शर्मा (पटियाला) द्वारा प्रमाणीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय

शोध कार्य में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान मानक विचलन प्रमाणिक विचलन त्रुटि तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। मध्यमान, मानक विचलन व CR परीक्षण का विवरण निम्नवत् हैः–

1. मध्यमान (Mn)–

   प्रस्तुत शोध के आंकड़ों के आधार पर औसत मान ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया है–

$$Mn = \frac{\sum x}{N}$$

   जहाँ Mn = मध्यमान

   X = समूह के प्राप्तांक

   Σ = योग

   N = समंको की कुल संख्या

2. प्रमाणिक विचलन (SD)–

   शोधकर्ता ने प्रसरण ज्ञात करने हेतु प्रमाणिक विचलन का प्रयोग किया है। प्रमाणिक विचलन की गणना हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया है–

$$SD = \sqrt{\sum d^2 / N}$$

   जहाँ SD = प्रमाणिक विचलन

   Σd^2 = मध्यमान से विचलनों के वर्गों का योग

   N = समूह की संख्या

3. CR-Value–

   मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच के लिए अध्ययनकर्ता ने CR-Value का प्रयोग किया है।

$$CR-Value = \frac{m_1 - m_2}{\sqrt{\frac{6_1{}^2}{N_1} + \frac{6_2{}^2}{N_2}}}$$

   जहाँ CR-Value = क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता हेतु)

   m_1 = प्रथम समूह का मध्यमान

   m_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

   6_1 = प्रथम समूह का मानक विचलन

   6_2 = द्वितीय समूह का मानक विचलन

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन

उद्देश्य नं0–1बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना।

परिकल्पना नं0–1 बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–1

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	प्रमाणिक विचलन त्रुटि SED	क्रान्तिक अनुपात CR	स्वतंत्रता के अंश Df	0.05 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष	0.01 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
बी.टी.सी. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	200	74.60	17.15	1.66	2.12	398	सार्थक है	सार्थक नहीं
बी.एड. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	200	78.34	16.20					

उपरोक्त सारणी में कार्य संतुष्टि के सभी कारकों के संयुक्त अध्ययन करने पर 200 बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाएं व 200 बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का मध्यमान क्रमशः 74.60 व 78.34 प्रमाणिक विचलन 17.15 व 16.20 प्रमाणिक विचलन त्रुटि 1.66 क्रान्तिक अनुपात 2.12 स्वतंत्रता के अंश 398 पाया गया है। चूंकि बी.टी.सी. एवं बी.एड प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि के सभी कारकों के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का क्रान्तिक अनुपात 2.12 प्राप्त हुआ है। जो निर्धारित सारणी मान 1.98 से अधिक है। जिसके आधार पर बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के मध्यमानों में अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है, तथा .01 स्तर पर सारणी मान 2.60 से कम है। अतः सार्थक नहीं है।

अतः हम कह सकते है कि परिकल्पना 01 सार्थकता के स्तर .05 पर अस्वीकृत हुई अर्थात् दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया, तथा सार्थकता के स्तर .01 पर स्वीकृत हुई अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

उद्देश्य नं0–2 ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना।

परिकल्पना नं0–2 ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–2

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	प्रमाणिक विचलन त्रुटि SED	क्रान्तिक अनुपात CR	स्वतंत्रता के अंश Df	0.05 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष	0.01 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
ग्रामीण बी. टी.सी. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	100	75.10	12.45	1.71	1.45	198	सार्थक नहीं	सार्थक नहीं
ग्रामीण बी. एड. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	100	77.60	11.80					

उपरोक्त सारणी में कार्य संतुष्टि मापनी के सभी कारकों के संयुक्त अध्ययन करने पर 100 ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाएं व 100 ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का मध्यमान क्रमशः 75.10 व 77.60 मानक विचलन 12.45 व 11.80 प्रमाणिक विचलन त्रुटि 1.71 क्रान्तिक अनुपात 1.45 स्वतंत्रता के अंश 198 पाया गया है। चूंकि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि के सभी कारकों के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का क्रान्तिक अनुपात 1.45 प्राप्त हुआ है। जो निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है। जिसके आधार पर ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के मध्यमानों में अन्तर .05 स्तर पर सार्थक नहीं है, तथा उसी प्रकार .01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः हम कह सकते है कि परिकल्पना 02 स्वीकृत हुई अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

उद्देश्य नं0–3 शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि की तुलना।

परिकल्पना नं0–3 शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी–3

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	प्रमाणिक विचलन त्रुटि SED	क्रान्तिक अनुपात CR	स्वतंत्रता के अंश Df	0.05 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष	0.01 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
शहरी बी. टी.सी. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	100	75.96	12.12	1.67	1.27	198	सार्थक नहीं	सार्थक नहीं
शहरी बी. एड. शिक्षक एवं शिक्षिकाएं	100	78.10	11.56					

उपरोक्त सारणी में कार्य संतुष्टि मापनी के सभी कारकों के संयुक्त अध्ययन करने पर 100 शहरी बी.टी.सी. एवं बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं व 100 शहरी बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का मध्यमान क्रमशः 75. 96 व 78.10 मानक विचलन 12.12 व 11.56 प्रमाणिक विचलन त्रुटि 1.67 क्रान्तिक अनुपात 1.27 स्वतंत्रता के अंश 198 पाया गया है। चूंकि शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि के सभी कारकों के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर का क्रान्तिक अनुपात 1.27 प्राप्त हुआ है। जो निर्धारित सारणी मान 1.98 से कम है। जिसके आधार पर शहरी क्षेत्र में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के मध्यमानों में अन्तर .05 स्तर पर सार्थक नहीं है, तथा उसी प्रकार .01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः हम कह सकते है कि परिकल्पना 03 स्वीकृत हुई अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की उपयोगिता एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध जनपद कानपुर नगर के ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'' नामक शीर्षक से सम्पन्न हुआ शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के गुणात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षकों का मार्ग दर्शन करेंगे जो अपना कार्य प्रभावी ढ़ंग से नहीं कर पाते हैं तथा शिशुओं के बौद्धिक स्तर की जानकारी नहीं रखते हैं। तथा समाज भी इस ओर प्रयास करेगा कि प्राथमिक शिक्षा में शिक्षक–शिक्षिकाओं की नियुक्ति बी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों से की जाए तथा बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की नियुक्ति पूर्व माध्यमिक या माध्यमिक विद्यालयों में की जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच.के. (2008) ''सांख्यिकीय के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा पृ0–429।
2. कुमार, आनन्द (2013) शिक्षा परिदृश्य में गुणवत्ता क्रान्ति की आवश्यकता, योजना पत्रिका वर्ष 58 अंक पृ0–56, 57।
3. गुप्ता, एस.पी. (2011) व्यवहार परक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद।
4. जन सत्ता. डॉट. कॉम।
5. mhrd. gov.nic.in
6. राय, पी.एन. (2008) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पृ0–399।
7. लाल, आर.बी., शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ–2006।
8. सिंह, अरूण कुमार (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation